कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

1756564

क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परी

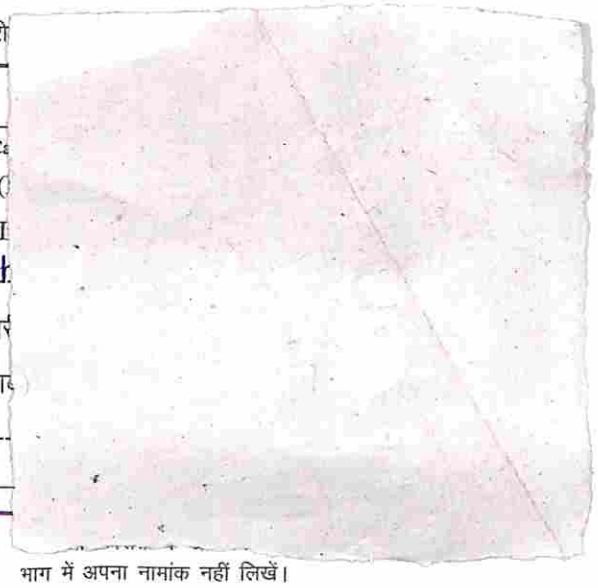

नोट :–
भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन ..... सोमवार .....

दिनांक ..... 25 अप्रैल , 2022 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	6	20	3
3	12	21	4
4	2	22	4
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक 46093

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है।168/2021

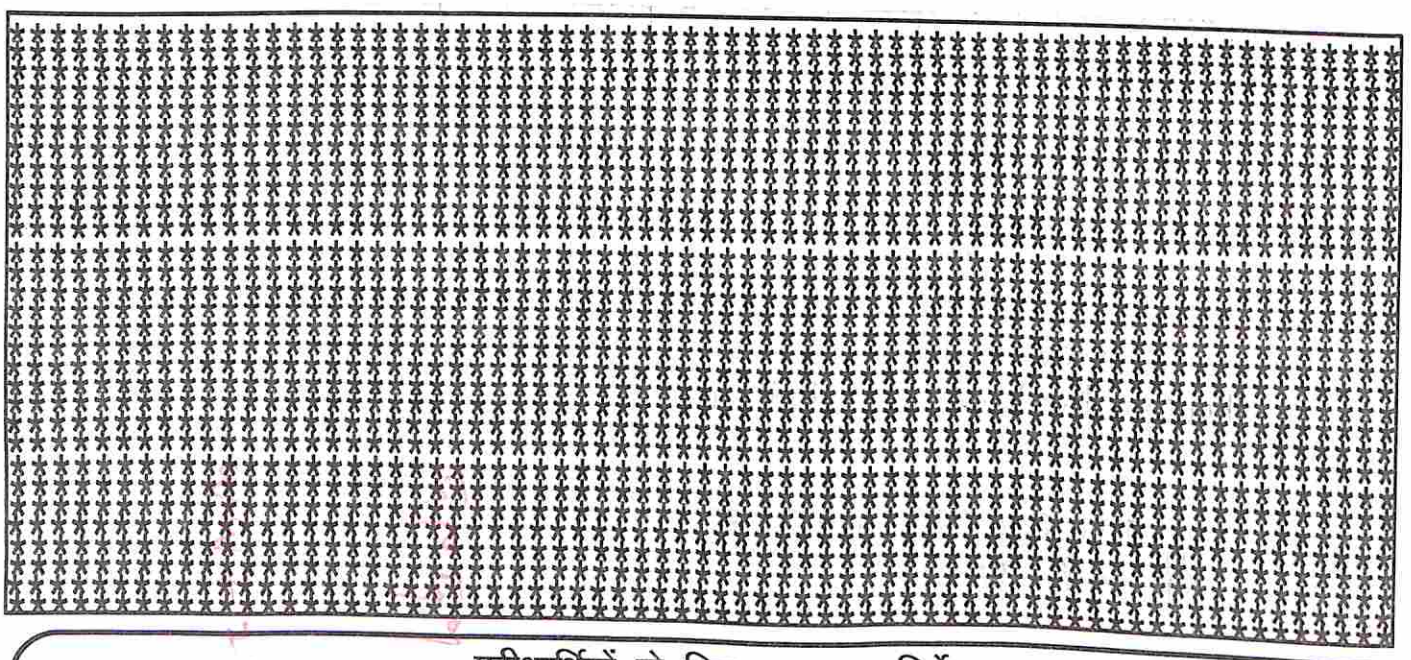

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

[खण्ड - अ]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 1

उ.

[1]	[2]	[3]	[4]	[5]	[6]	[7]	[8]	[9]	[10]	[11]	[12]
[ब]	[द]	[अ]	[स]	[अ]	अ	[ब]	ब	द	[द]	[ब]	[द]

12

प्र. 2

i) उ. विशेष व्यक्ति व वस्तु। 01

ii) उ. निश्चित। 01

iii) उ. ~~चवाक~~ पाँच / 45। 01

iv) उ. परिवर्तन। 01

6

v) उ. 22। 01

vi) उ. कृत / कृदित 01

प्र. 3

1) उ. **संधि:-** दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को 'संधि' कहते हैं।

→ स्वर संधि के भेद / प्रकार निम्न लिखित है कि -

1) दीर्घ सादस्वर संधि।
2) गुण स्वर संधि।
3) वृद्धि स्वर संधि।
4) यण स्वर संधि।
5) अयादि स्वर संधि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

2) उ० कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अन्तर निम्न लिखित

कर्मधारय समास	बहुब्रीहि समास
* वे सामासिक पद जिसमें विशेषण व विशेष्य तथा उपमा व उपमेय के भाव प्रकट होते है, 'कर्मधारय समास' कहलाता है।	वे सामासिक पद जि पद व द्वितीय पद दे प्रधान नहीं होते है कोई अन्य ही पद प्रधा 'बहुब्रीहि समास' कहलात
* उदा०- महापुरुष :- महान है जो पुरुष	उदा०- त्रिनेत्र :- तीन है जिसके [भग

(12)

BSER-168/2021

3 उ० आकाश टूटना :- बड़ी विपत्ति आना

4 उ० अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-2 अपने को दे :- अंधा उपयोगी को ऐसे ही बाटता र

5 उ० 'नेताजी का चश्मा' पाठ 'देशभक्ति' के योगदान को दर्शाते

6 उ० मन्नु भंडारी के पिता की सबसे बड़ी दुर्बलता असम्म करना।

7 उ० 'नौबतखाने में इबादत' पाठ 'बिस्मिला खाँ साहब [अमी के बारे में है।

8 उ० गोपियों ने ऐसा व्यंग्य बाण चलाते हुए इसलिए कहा क अभी तक 'प्रेम के धागे से अछूते व किसी के प्रति उनका

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		आकर्षित नहीं हुआ था इसलिए गोपियाँ व्यंग्यात्मक रूप से उद्धों को भाग्यशाली बताया।
	9 उ०	परशुराम जी का गुस्सा 'राम के विनम्रता व शीतल वचनों को सुनने पर शान्त हुआ।
	10 उ०	"आत्मकथ्य' कविता में देशभक्तियों पर मजाक व अपनी कथा सुनने वालों मजा बनाया गया।
	11 उ०	'माता का अँचल' पाठ में बालमनोवृत्ति का चित्रण भोलनाथ के द्वारा' की गई है।
	12 उ०	यूमथांग का अर्थ - घाटियाँ, यह 'सिक्किम' में स्थित है,
		[खण्ड - ब]
	प्र० 4 उ०	हालदार साहब ने पान वाले से पूछा की आपके नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा कैसे बदल जाता है तब पान वाले ने कहा कि यह कैप्टन करता है। क्योंकि कैप्टन एक देशभक्त व्यक्ति था व उसे नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे के अच्छी नहीं लगती थी तथा उन्हें लगता था कि नेताजी को बिना चश्मे असुविधा होती है इस कारण वह अपने गिने-चुने फ्रेमों में से एक लगा देता था। वह देशभक्त व्यक्ति था व नेताजी का सम्मान करता था।
2		

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.5

उ० बालगोबिन भगत रेखाचित्र के माध्यम से साधु व एक गृहस्थ व्यक्ति के गुणों व चरित्र का उद्घाटन किया गया है क्योंकि बालगोबिन भगत ऐसे सिद्धान्तो पर चलते थे उससे यह लगता है जिससे बालगोबिन भगत साधु हो तथा वे खेती-बाड़ी भी करते थे इससे यह लगता है कि गृहस्थ व्यक्ति है।

(2) बालगोबिन भगत किसी से खाम-खा झगड़ा मौल नहीं लेते थे, तथा खड़ा व्यवहार करते थे। दूसरो की वस्तु को छूते तक नहीं थे तथा बच्ची से दीख़ा जाए तो वे दूसरों के खेतो में शौच तक नहीं जाते थे।

प्र.6

उ० नवाब साहब ने खीरे की फांकों को बिना खाये ही इसलिए फेंक दिया। क्योंकि वे नवाबी के व अमीर व्यक्ति तथा यह तुच्छ सी वस्तु नवाब साहब लेखक के सामने कैसे खाए, इसलिए नवाब साहब ने खीरे की फांकों को बिना खाये ही फेंक दी।

(2) यह सब व्यंग्यात्मक रूप से किया गया है, क्योंकि जिस प्रकार बिना घटना क्रम व पात्र के कहानी नहीं लिखी जा सकती उसी प्रकार बिना भोजन खाए पेट नहीं भर सकता है।

प्र.7

उ० (2) काशी में मरण भी मंगल इसलिए माना जाता है क्योंकि वहाँ गंगा मैया तथा गंगा मैया में ही अस्थियों को प्रवाहित की जाती, काशी में विश्वनाथ जी का मन्दिर, व यहाँ बालाजी मंदिर तथा यहाँ बिस्मिल्ला खाँ साहब भी है। इसलिए काशी में मरण भी मंगल माना जाता। काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ मिली-जुली संस्कृति है, यहाँ एकता में अनेकता है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 8
उ०

गोपियों ने राजधर्म उसे कहाँ जो अपनी प्रजा को नहीं सताता है तथा दूसरों के साथ अन्याय नहीं करता है तथा सभी के समान व्यवहार करता है व राजा अपनी प्रजा के दुःख, पीड़ा को अपनी दुःख, पीड़ा समझता यह भ गोपियों के द्वारा राजधर्म बताया गया।

2

क्योंकि श्रीकृष्ण ने राजा होते हुए भी अपनी प्रजा अर्थात् गोपियों के साथ अन्याय किया है क्योंकि उन्होंने मथुरा जाते वक्त कहाँ था कि वह वापस लौटकर गोपियों के पास जरूर आएगा। किन्तु वे न आकर योग संदेश भेज दिया। इसलिए श्री कृष्ण मर्यादा में नहीं रह सके।

प्र. 9
उ०

क्रिया :- किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

2

उदा. - राजा ने फूल तोड़ा।
यहा तोड़ना क्रिया है।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

अकर्मक क्रिया — सकर्मक क्रिया।

* अकर्मक क्रिया :- जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्ता पर पड़े, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं।

उदा. - पक्षी आसमान में उड़ रहे हैं।

→ अकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं।
* पूर्ण अकर्मक।
* अपूर्ण अकर्मक।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* सकर्मक क्रिया :- क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते है,

उदा. - राम ने श्याम को पत्र लिखा।

→ सकर्मक क्रिया के तीन भेद होते हैं।

* सकर्मक एककर्म क्रिया
* द्विकर्म सकर्मक क्रिया
* अपूर्ण सकर्मक क्रिया,

प्र.10

उ०

2

माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना का आशय है कि "माँ ने कहा कि तुम सज्जन, साहसी तो होना पर कायर, कमजोर, डरपोक व अत्याचार सहन करने वाली मत होना।

क्योंकि ये लोभी लोग दहेज के कारण लड़कियों का शोषण व प्रताड़ित करते है तथा कभी-2 तो उन्हे मार ही देते हैं इसलिए तुम यह सहन मत करना उनका तुम डटकर मुकाबला करना।

BSER-108/2021

प्र.11

उ०

2

उत्साह कविता के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है कि- उत्साह एक आह्वान गीत है सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी यह कहना चाहते है उत्साह से लोगों क्रांति आती है तथा जोश आता है जिससे वे शोषण व प्रताड़ित नहीं होते है तथा उनका डटकर मुकाबला करते है उत्साह से लोगों के क्रांति कैसे लोग क्रांति करते है जिससे उन्हे नये जीवन की प्राप्ती होती है तथा किसी श से शोषण व प्रताड़ित सहन नहीं कर पाते है उत्साह कविता से कवि यह ही संदेश दे रहे है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.12
उ.
ग्रामीण अंचल में बच्चों के खेल निम्न प्रकार से होते है जैसे - मिठाई की दुकान लगाना, घरौंदे बनाना, बरात का जुलुस निकालना व खेती करना। क्योंकि बच्चे जैसा ग्रामीण लोगों को देखते है वैसे ही खेल खेलते है।

ग्रामीण बच्चों के खेल ग्रामीण लोग जैसा जीवन वतीत करते है वैसे ही खेल खेलते है वे मिठाई की दुकान लगाना, घरौंदे बनाना, बरात का जुलुस निकालना व खेती करना ऐसे ग्रामीण खेल खेलते है।

2

प्र.13
उ.
'जार्ज पंचम की नाक' पाठ सत्ता से जुड़े लोगों की औपनिवेशिक काल की तथा गुलामी की मानसिकता को दर्शाता है क्योंकि ये जार्ज पंचम की नाक के कारण अपनी देश के समान सम्मान व इज्जत को दाव पर लगा दिया।

इस पाठ सत्ता से जुड़े लोगों गुलामी की मानसिकता वाले लोग तथा ये औपनिवेशिक काल के लोग। अपनी इज्जत को भी दाव पर लगा दिया तथा जार्ज पंचम की नाक लगाने के कारण।

2

BSER-1168/2021

प्र.14
उ.
तिस्ता नदी सिक्किम राज्य में बहती है क्योंकि ये हमारी अनेक आवश्यकताओं को पुरा करती है यह लोगों के जीवन के लिए पीने के लिए पानी देती है भोजन के लिए पानी देती है तथा तिस्ता नदी तो एक पवित्र पावित्र नदी है इससे हमारे देश की धार्मिक नदी होती है जिससे लोगों को अनेक आवश्यकता जैसे विद्युत प्राप्त करना उद्योग धंधों में पानी की आवश्यकता को पूरी करना आदि। तिस्ता नदी स्वच्छ तथा निर्मल है तथा सौंदर्य बहुत ही सुन्दर है

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.15

उ.

'यशपाल'

यशपाल का जन्म 1899 में मध्यप्रदेश में हुआ। इन्होंने वही अपने व गाँव में ही शिक्षा प्राप्त की। ये बहुत ही प्रमुख कवि माने जाते है इन्होंने लखनऊ अन्दाज को आठ खण्डों में प्रकाशित किया। इनका मृत्यु 1968 में हो गई।

यशपाल ने मानव के नवाबी रहन सहन पर काव्य, रचना व कहानी संग्रह लिखी। इन्होंने प्राकृति की सौंदर्यता का अदबुत चित्रण किया है। यशपाल ने शब्द्र के प्रेम का अद्भुत चित्रण व वर्णन किया है। इन्होंने समाज में होने वाले भेदभावों पर विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए लोगों सजग किया है। इन्होंने नारी चित्रण किया है।

2

यशपाल बहुत ही प्रमुख कवि मानने जाते है क्योंकि इन्होंने नारी के सौंदर्य का ऐसा चित्रण किया है प्रकृति-प्रेमी का भी अद्भुत वर्णन किया है। इन्होने प्रकृति की सौंदर्यता जैसे फाल्गुन में हमारी की सौंदर्यता बहुत ही अद्भुत होती है।

रचनाएँ :- नाश और निर्माण
* फूल और काटे।
* आदमी जात: का आदमी।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०16

उ०

अथवा

"तुलसीदास"

तुलसीदास का जन्म 1532 में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता हुलसी थी। ये जन्म लेते ही 5 साल जितने बड़े व बड़े-बड़े दाँत थे। यह देखकर उनके पिता व माता ने पालन-पोषण के लिए अपनी दासी मुनिया को दे दिया। इनकी पत्नी रत्नावली व गुरु नरहरिदास थे। इनके गुरु व पत्नी के कहे मार्ग पर जाने पर इन्होंने रामचरित्रमानस का वर्णन किया व राम भक्ति में लीन हो गए। इनकी मृत्यु 1623 में काशी में हुई।

(2)

तुलसीदास ने बचपन से ही संघर्षों का सामना करना पड़ा। इन्होंने राम चरित्रमानस लिखा तथा राम भक्ति में लीन हो गए। इन्होंने प्रकृति के सौंदर्य का अद्‌भुत वर्णन किया है तथा प्रकृति प्रेमी के चित्रण किया है इन्होंने समाज में रहने वाले सज्जन लोगों का वर्णन किया है

तुलसीदास जी अवधी व ब्रज भाषा पर बराबर का अधिकार था। इन्होंने अवधी भाषा में रामचरित्रमानस व विनयपत्रिका को ब्रज भाषा में लिखा है।

रचनाएँ :-

* रामचरितमानस
* गीतावली
* कृष्णगीतावली
* विनयपत्रिका
* दोहावली

आदि।

BSER 168/2021

'खण्ड - स'

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.17 उ.

अथवा

* संकेत :- शहनाई — — — — — — — — — मुराद पूरी।

* शब्दार्थ :- मगंलध्वनि - शुभ ध्वनि , प्रार्थना - विनती ।

* सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी कक्षा दशवीं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' के 'नौबतखाने' पाठ से लिया गया है जिसके कवि 'यतीन्द्र मिश्र' थे।

* प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश मे बिस्मिल्ला खाँ प्रार्थना करते है उसके बारे में वर्णन किया गया है कि -

(4)

* व्याख्या :- शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी वर्ष तक सुर मागते रहे। तथा सच्चे सुर की माँग करते थे। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते थे - मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ आँसु निकल आएँ। उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।

* विशेष :- प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सहज व सरल है
  * इसमें लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग हुआ।
  * तथा इसमे तद्भव तद्सम शब्दों की बाहुल्यता है।
  * कवि भाषा मार्मिक है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 18 उ०

* संकेत :- हमारे - - - - - - - - - - - - - चकरी।

* शब्दार्थ :- लकरी - लकड़ी, बचन - वचन

* सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश कक्षा दशवीं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' के ऊधौ तुम हो अति बड़भागी 'पद' से लिया गया है जिसके कवि 'सुरदास' हैं।

* प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश मे गोपियों व ऊधो के संवाद मे गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम का वर्णन किया गया है कि -

* व्याख्या :- प्रस्तुत पद्यांश मे गोपिया कहती है कि हम हारित पक्षी की तरह श्रीकृष्ण को पकड़ हमेशा के लिए पकड़ रखा है। तथा हम मन, क्रम व वचन से नंद-नंद ऐसा कहकर पुकारते है तथा हम सोते-जागते, दिन-रात हमेशा कान्हा-कान्हा रट करते है। हमने ऐसी तुम्हारा यह योग संदेश कड़वी ककड़ी के समान है जो ना हमने सुनी है ना देखी व ना ही महसुस की है इसलिए यह योग संदेश तुम उसे दो जिनका मन चकरी अर्थात चंचल हो।

* विशेष :- प्रस्तुत पद्यांश की भाषा 'ब्रज' है।
  * प्रस्तुत पद्यांश मे छन्द 'पद' है।
  * प्रस्तुत पद्यांश अलंकारो का अद्भुत समावेश है।
  * प्रस्तुत पद्यांश मे मार्मिक भाषा है।
  * इसमे सहज व सरल भाषा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.19
उ०

अथवा

लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा। ऐसा बालगोबिन भगत ने इसलिए किया क्योंकि वे रूढ़ीवादी प्रथाओं के विरुद्ध थे वे इन रूढ़ीवादी प्रथाओं को समाप्त करना चाहते थे इसलिए वे अपनी पतोहू के हाथों से ही अपने पुत्र को आग दिलवाई तथा अपनी पतोहू को उसके भाईयों के साथ भेज उसका दूसरा विवाह करवाना चाहता था।

3

बालगोबिन भगत इन रूढ़ीवादी प्रथाओं के विरुद्ध होने के कारण ऐसा किया। क्योंकि रूढ़ीवादी प्रथाएँ गलत था। इससे लोगों व खास तौर से स्त्रियों से भेदभाव होता था।

BSER-168/2021

प्र.20
उ०

3

'यह दंतुरित मुसकान' कविता से नागार्जुन यह संदेश दे रहे है कि- दंतुरित मुसकान बड़ी ही मनोहारी व सुन्दर है इसके इसे देख बड़े से बड़े कठोर हृदय वाले लोगों का हृदय भी पिघल जाता है तथा बबूल व बैर समान पेड़ भी शेफाली के पुष्प के समान हो जाते है।

लेखक को ऐसा लगता है जैसे तालाब को छोड़कर मेरी झोपड़ी में कमल का पुष्प खील गया हो। तथा अपने पिता से अनजान थे तथा आद्य अतिथी की तरह मिल रहा था। क्योंकि इसने अपनी माता से ही मधुपर्क लिया था। यह दंतुरित मुसकान बहुत बड़ी व सुन्दर महा मनोहारी हो

[खण्ड - द]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.22
उ0

हिम्मत नगर
दिनांकः- 25 अप्रैल, 2022

प्रिय अनुज भाई।
मैं यहाँ कुशल हूँ तथा आशा करता हूँ कि तुम भी वहा कुशल ही होगे। तुम्हारी बहुत याद आने लगी। तथा कभी मैं डाकिए को देखता व ~~भम~~ नहीं सुनता मुझे बहुती दुखी होता। तथा लम्बे के बाद मुझे डाकिए से तुम्हारा लम्बे अन्तराल वाला पत्र प्राप्त हुआ। तथा खुशी के मारे पत्र को पढ़ा तो पाया कि ~~आपच~~ आपका स्वास्थ्य खराब है।

इसलिए तुम चिकित्सालय जाकर के चिकित्सक से मिलकर अपने स्वास्थ्य को ~~चा~~ जाँच करवा लो। क्योंकि अब बहुत सारी बिमारियाँ फैल रही है इसलिए मेरा परामर्श है कि तुम अभी जाकर पहले अपने स्वास्थ्य की जाँच करवा लो।

अब गर्मियों का समय चालू हो गया है इसलिए यह अनेक बीमारियों को ~~मौल~~ न्यौता दे रही। इसलिए समय - समय म पानी ~~पितम~~ ~~र~~ पीता रहा करे। क्योंकि इस समय शरीर में पानी की की कमी हो जाती है इसलिए समय-2 पर पानी पीता रहा करना।

यहाँ सब कुशल है तथा गोलू - मोलू भी स्वस्थ है।
शेष कुशल।

आपका बड़ा भाई।
नरेन्द्र

(4)

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.27

उ०

अथवा

खुल गया ! खुल गया

नव सृजन संस्था

आपको एक बार खरीदे मूर्तियों को बार-बार खरीदे का मन करेगा।

* यहाँ सभी प्रकार की मूर्तियाँ मिलती है
* आपकी जो पसंद हो वो खरीदे।
* मूर्तियाँ खरीदने पर 10% की छुट।

एक बार खरीदो तो है

बार-बार मन करने

अच्छी गुणवत्ता वाला तथा एकदम सस्ता

स्थान - राजस्थान।

सम्पर्क - 9999999999

BSER-16B/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०21
उ०
(ब) वैश्विक महामारी कोरोना :-

—: रूपरेखा :—

* प्रस्तावना।
* कोरोना क्या है,
* महामारी का फैलाव,
* महामारी की भयावहता।
* बीमारी से बचने के उपाय।
* उपसंहार।

(4)

* प्रस्तावना :-

हम सामाजिक प्राणी। हमारा समाज सदाचारी है तथा हमने अनेक बार अपने समाज को गर्व महसूस करने का प्रयास करते है जैसे पहले आजादी से पहले हम गुलामी की जंजीरों में फंसे तब हमने प्रयास किया तब आजाद हो जाए। हम समाज पर गर्व का महसूस करते उससे पहले यह वैश्विक महामारी कोरोना समस्या हमारे सामने अजगर के भाँती मुँह खोले बैठी है। यह तथा हमेरे हमारे आकांक्षाओं को घरों समान नष्ट कर जाती है।

* कोरोना क्या है :-

कोरोना एक वायरस है जो चीन से फैला तथा एक घातक बीमारी है तथा यह संक्रामक रोग है यह एक-दूसरे के सम्पर्क में आने से फैलती है। इस कारण यह बहुत बड़ी घातक बीमारी है तथा इससे बचना ही सबसे बड़ा उपाय है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* महामारी का फैलाव :-

यह मारी मा॰ महामारी जिस प्रकार फैलती है जिस प्रकार एक फल सब्जी फलों को नष्ट कर देता है इसी प्रकार एक मच्छ मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है इसी प्रकार यह महामारी पूरे विश्व मे फैल गई। इसका निवारण ही समस्ते सबसे बड़ा साधन है।

* महामारी की भयावहता :-

यह महामारी सबसे घातक इसलिए इसका समाधान करना सबसे ज्यादा जरूरी यह समस्या बहुत बड़ी हो जाने पर इसका निवारण नहीं कर पाएगे। यह हमारी मानवीय मूल्य के पतन के कारण, शिक्षा के अभाव के कारण तथा जनजाग्रति के अभाव के कारण यह सब हो रहा है तथा हमारी सरकारी सरकार की उदासीनता व लचीली कानून व्यवस्था के कारण ऐसा हो रहा है। इसलिए इसका समान करना चाहिए।

* बीमारी से बचने के उपाय :-

इस महामारे से अपने जीवन को बचाना अत्यन्त आवश्यक है इसलिए हमें मास्क पहना चाहिए, समय-समय पर हाथ धाना धोना चाहिए। तथा दो गज दूरी मास्क है जरूरी।

* मानवीय मूल्य की वृद्धि।
* शिक्षा की प्रचार-प्रसार करके।
* जनजाग्रति लाकरके।
* सरकार की कानून व्यवस्था को कठोर करके।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मानवीय मूल्य की वृद्धि जैसे प्रेम, स्नेह व सहायता आदि करना तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार करके इस कोरोना महामारी से संचेत कर सकते हैं। तथा जनजागृति करके तथा लोगो को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करके व सरकारी कानून व्यवस्था को कठोर करके ऐसा किया जा सकता है तथा महामारी का निवारण व समाधान हो सकता है।

* उपसंहार :-

यह महामारी मानवीय मूल्यों के पतन के कारण जैसे - घृणा, अपना स्वार्थ करना १५ जिसके कारण यह बीमारी जन्म ली। तथा हमा मानवीय मूल्यों की वृद्धि करके शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना। जनजागृति समाज में फैलाना तथा लोगों को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करना। सरकार द्वारा कठोर कानून बनवाकर। क्योंकि इस कारण लोग बिना मास्क घर से बाहर नहीं निकलेगें।

दो गज दूरी
मास्क है जरूरी।

1+2+1

* समाप्त *

Roll No - 1154253

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

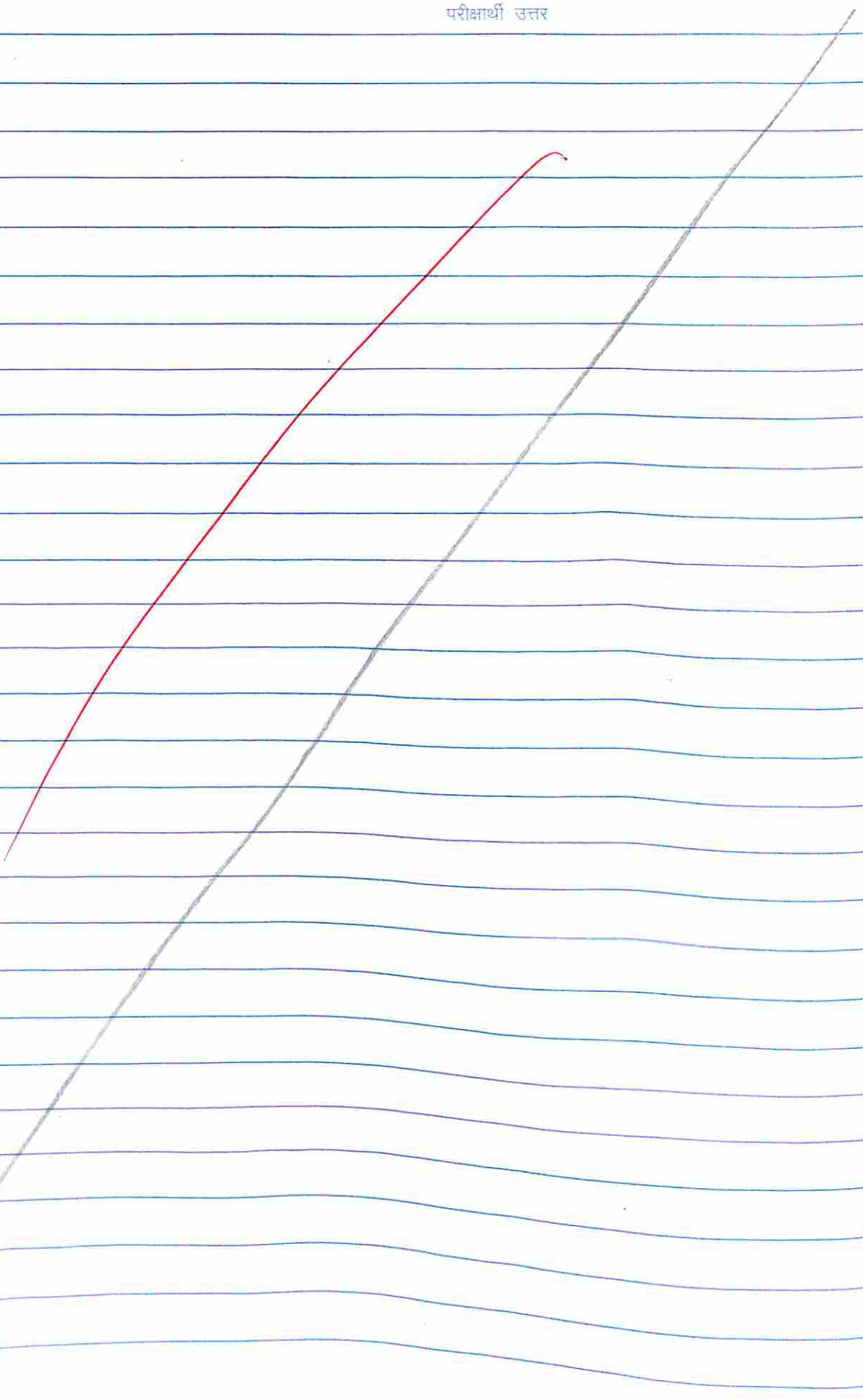

BSER-108/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021